



अमृत काल

अंतर्राष्ट्रीय विशिषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका

ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

नरेंद्र¹, डॉ. रवितोष कुमार सिंह²

¹रिसर्च स्कॉलर, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर

²सहायक प्रोफेसर, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर

सारांश

स्कूल या कॉलेज के छात्रों के प्रदर्शन की भविष्यवाणी शिक्षा में स्पष्ट महत्व की समस्या है। शिक्षाविद, शोधकर्ता और मार्गदर्शन कार्यकर्ता हमेशा शैक्षणिक उपलब्धि की भविष्यवाणी करने में उपयोगी उपकरण की तलाश करते हैं, ऐसा उपकरण उन छात्रों की पहचान करने में सहायक होता है, जिन्हें यदि आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया जाए, तो उन्हें अधिकतम ऊंचाइयों तक पहुँचाया जा सकता है। शैक्षणिक सफलता के भविष्यवक्ता के रूप में बुद्धि परीक्षण के अंकों और अन्य बौद्धिक कारकों का उपयोग करते हुए इस दिशा में कई प्रयास किए गए हैं लेकिन बहुत सीमित उपयोग के लिए पाए गए हैं। आज, एक बढ़ता हुआ अहसास है कि अकादमिक उपलब्धि की भविष्यवाणी में मार्जिन त्रुटि को कम करने के लिए समाजशास्त्रीय, गैर-संज्ञानात्मक, संज्ञानात्मक और पर्यावरणीय कारकों जैसे अन्य कारकों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इसलिए, वर्तमान अध्ययन वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर विद्यालय वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य, अध्ययन की आदतों और आत्मविश्वास के प्रभाव का पता लगाने का एक विनम्र प्रयास करता है। दुनिया अधिक से अधिक प्रतिस्पर्धी होती जा रही है और प्रदर्शन की गुणवत्ता व्यक्तिगत प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कारक है। उत्कृष्टता विशेष रूप से, शिक्षाविदों में और आम तौर पर अन्य सभी क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में देखा गया है। माता-पिता की इच्छा होती है कि उनके बच्चे प्रदर्शन की सीढ़ियाँ यथासंभव उच्च स्तर पर चढ़ें। उच्च स्तर की उपलब्धि की यह इच्छा छात्रों, शिक्षकों, संस्थानों और स्वयं शिक्षा प्रणाली पर सामान्य रूप से बहुत दबाव डालती है। वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है जैसे शिक्षा की पूरी प्रणाली छात्रों की अकादमिक उपलब्धि के इर्द-गिर्द घूमती है, हालाँकि इस प्रणाली से कई अन्य परिणामों की भी अपेक्षा की जाती है।

मुख्य शब्द: उपकरण, आत्मविश्वास, गुणवत्ता, वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य

परिचय

शिक्षा को एक व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति ज्ञान, कौशल, आदतें, विश्वास, अनुभव, मूल्य और एक स्वस्थ दृष्टिकोण प्राप्त करता है। शिक्षा, एक बहुत ही सामान्य अर्थ में, एक बुनियादी स्तर पर एक अनुभव या कार्य को संदर्भित करने के रूप में अभिव्यक्त की जा सकती है जिसका किसी व्यक्ति के मन, चरित्र या शारीरिक क्षमता पर एक रचनात्मक प्रभाव पड़ता है। शिक्षा एक व्यक्ति को सभ्य, परिष्कृत, सुसंस्कृत और ज्ञानवान बनाती है। यह एक सभ्य समाज के निर्माण का एकमात्र साधन है। शिक्षा का लक्ष्य एक व्यक्ति को परिपूर्ण बनाना है। हर समाज शिक्षा को महत्व देता है क्योंकि यह सभी बुराइयों का रामबाण इलाज है। यह किसी के जीवन में विभिन्न समस्याओं को हल करने की कुंजी है। शब्द के व्यापक अर्थ में शिक्षा का अर्थ है मनुष्य को उसकी संपूर्णता की खोज में सहायता करना, जहाँ संपूर्णता का तात्पर्य मनुष्य की सभी क्षमताओं के सामंजस्यपूर्ण विकास से है। सच्ची शिक्षा जीवन के चार आयामों अर्थात् शारीरिक, मानसिक और नैतिक (आध्यात्मिक) और सामाजिक क्षमताओं का



अमृत काल

अंतर्राष्ट्रीय विश्वज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका

ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

सामंजस्यपूर्ण विकास है, जो व्यक्ति को परिपक्व जीवन जीने के लिए बौद्धिक रूप से तैयार करेगा। शिक्षा को जीवन और उसके रहस्यों, उसकी समस्याओं के प्रति जागने, समस्याओं को हल करने के तरीके सीखने और जीवन के रहस्यों का जश्न मनाने की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है। यह सभी चीजों की अंतर-निर्भरता को जानने, हमारे वैश्विक गांव के लिए खतरे के बारे में जानने, विकल्प बनाने के लिए मानव जाति के भीतर की शक्ति के बारे में जानने, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संरचनाओं में निहित बाधाओं के बारे में जानने के लिए जागने की प्रक्रिया भी है जो हमें जागने से रोकती हैं। शिक्षा समाज की बुनियादी जरूरत है। यह व्यक्ति में कौशल का पोषण और विकास करती है ताकि वह एक योग्य इंसान बन सके। यह व्यक्ति के ज्ञान और बुद्धि को प्रकाशित करती है। चूंकि मनुष्य सामाजिक वातावरण में डूबा हुआ है, इसलिए शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य समाज में योगदान दे सकता है। मानव सभ्यता समय-समय पर अपनी शिक्षा प्रणाली में नवाचार करके आगे बढ़ी है। किसी भी सभ्यता की विशेषताएं उसकी शिक्षा प्रणाली का प्रतिबिंब होंगी। शिक्षा मनुष्य के विकास में एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बच्चे के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा व्यक्ति के जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है, व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों रूप से। शिक्षा व्यक्ति के जीवन को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा का उद्देश्य वंचित लोगों की मदद करना है ताकि वे व्यक्तिगत उन्नति प्राप्त करके उत्पादकता उत्पन्न कर सकें और बदले में समृद्धि के उच्च स्तर को प्राप्त कर सकें।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

यह सही कहा गया है कि किसी राष्ट्र का भाग्य उसकी कक्षाओं में निहित है। किसी भी राष्ट्र की ताकत उसके शिक्षक की अच्छी तरह से शिक्षित, जिम्मेदार, अच्छी तरह से समायोजित युवा पीढ़ी को पालने की क्षमता पर निर्भर करती है जो बड़ी पीढ़ी के सेवानिवृत्त होने के बाद आगे बढ़ेगी। आज के छात्र राष्ट्र के भावी नागरिक हैं और इसलिए यह शिक्षकों, समाज और सरकार की जिम्मेदारी है कि वे देखें कि छात्र शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और शैक्षणिक रूप से स्वस्थ हैं।

शिक्षा को छात्रों को एकीकृत व्यक्तित्व के विकास में मदद करनी चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य एकीकृत व्यक्तित्व के आयामों में से एक है। जो व्यक्ति अपने मन को नियंत्रित करने में सक्षम हैं, वे किसी भी स्थिति में जीत सकते हैं। वे अपनी भावनाओं को सकारात्मक रूप से निर्देशित करने में सक्षम होंगे और भावनाओं के किसी भी नकारात्मक प्रभाव जैसे तनाव, चिंता विकार आदि से बच सकते हैं। भावना हर किसी के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए मनोवैज्ञानिकों ने शिक्षण और सीखने में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर जोर दिया है। कक्षा में शिक्षण और सीखना शांतिपूर्ण तरीके से होना चाहिए ताकि यह छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाए।

इससे छात्रों को अपनी तर्क क्षमता विकसित करने में भी मदद मिलनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के लिए इस आधुनिक तकनीक आधारित दुनिया का सामना करना आवश्यक है। इसलिए छात्रों को समस्याओं को हल करने के लिए कई तरह की रणनीतियाँ विकसित करने की ज़रूरत है, जैसे कि आरेखों का उपयोग करना, पैटर्न की तलाश करना, या विशेष मूल्यों या मामलों की कोशिश करना।

इसलिए यह आवश्यक है कि समस्या-समाधान रणनीतियों के बारे में जानकारी पाठ्यक्रम में शामिल की जाए। छात्रों को समस्या को हल करते समय उपयोग की जाने वाली रणनीतियों की निगरानी और समायोजन करना भी सीखना चाहिए। छात्रों के विषय के प्रति दृष्टिकोण उस विषय में उनकी उपलब्धि के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। छात्रों के बीच समस्या समाधान की क्षमता उन्हें अपनी शैक्षिक समस्याओं से आसानी से निपटने में मदद करेगी। शैक्षिक प्रक्रिया में मानसिक स्वास्थ्य और समस्या समाधान क्षमता के महत्व को समझने के बाद, अन्वेषक ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में मानसिक स्वास्थ्य और समस्या समाधान क्षमता का पता लगाने का प्रयास किया है।

अध्ययन का दायरा

सामान्य तौर पर अध्ययन का दायरा अनुसंधान की सीमाओं, अनुसंधान के लिए उपयोग किए जाने वाले विशिष्ट डेटा और डेटा की व्याख्या करने के लिए उपयोग किए जाने वाले सिद्धांतों को रेखांकित करता है। किसी भी अध्ययन से निकलने वाली प्रक्रियाओं का



वास्तविक व्यावहारिक स्थिति पर प्रभाव होना चाहिए। वर्तमान अध्ययन भारत के कोयंबटूर जिले से संबंधित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में मानसिक स्वास्थ्य और समस्या समाधान क्षमता का मूल्यांकन करता है। वर्तमान अध्ययन माता-पिता के लिए उपयोगी होगा, ताकि वे घर के अंदर और बाहर अपने बच्चों द्वारा सामना की जाने वाली मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए अंतर्दृष्टि विकसित कर सकें। साथ ही, वे अपने बच्चों को समस्या समाधान कौशल विकसित करने में सहायता कर सकते हैं, ताकि भविष्य में वे अपनी समस्याओं को स्वयं हल कर सकें और अपनी शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार कर सकें। यह अध्ययन शिक्षकों, शिक्षाविदों, परामर्शदाताओं के लिए भी उपयोगी होगा, क्योंकि वे मानसिक स्वास्थ्य और समस्या समाधान कौशल के महत्व का मूल्यांकन कर सकते हैं, जो छात्रों को कुशल और भावनात्मक रूप से स्थिर बनाएगा। यह अध्ययन प्रभावी पाठ्यक्रम बनाने में शैक्षिक योजनाकारों के लिए भी उपयोगी होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।
2. स्कूल के अनुसार माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।
3. साहित्य की समीक्षा

अमनदीप सिंह एट अल., (2015) ने विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का आकलन किया। गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, भारत के विभिन्न विभागों से 17 से 27 वर्ष की आयु के 30 लड़कों (15 ग्रामीण और 15 शहरी) और 30 लड़कियों (15 ग्रामीण और 15 शहरी) का एक नमूना चुना गया। इस अध्ययन में, पीटर बेकर (1989) द्वारा विकसित मानसिक स्वास्थ्य प्रश्नावली का उपयोग करके छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का आकलन किया गया। डेटा का विश्लेषण चैम्पै संस्करण 16.0 का उपयोग करके किया गया। परिणाम से पता चला कि मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में लड़कों और लड़कियों, ग्रामीण लड़कों और शहरी लड़कों और ग्रामीण लड़कियों और शहरी लड़कियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। माध्य की तुलना करने पर पता चला कि लड़कियों, शहरी लड़कों और शहरी लड़कियों का मानसिक स्वास्थ्य लड़कों, ग्रामीण लड़कों और ग्रामीण लड़कियों की तुलना में बेहतर था।

भारत कुमार रेड्डी के.आर. एट अल., (2011) ने व्यवहार संबंधी कठिनाइयों और मानसिक स्वास्थ्य विकारों के लिए शक्ति और कठिनाई प्रश्नावली (एसडीक्यू) का उपयोग करते हुए, भारत के बेंगलूर में शहरी स्कूलों में पढ़ने वाले भारतीय किशोरों के समुदाय पर मानसिक स्वास्थ्य विकारों का अध्ययन किया। अध्ययन शहरी बेंगलूर के तीन स्कूलों में किया गया था। अध्ययन आबादी में 3 स्कूलों में पढ़ने वाले हाई स्कूल के बच्चे शामिल थे, जिनकी उम्र 11 से 16 साल के बीच थी। एसडीक्यू का स्व-रिपोर्ट संस्करण कक्षा में उन विद्यार्थियों को दिया गया जिनके माता-पिता ने सहमति दी थी। सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज (एसपीएसएस) का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया। पुरुषों के आचरण समस्या उप-स्केल पर उच्च औसत अंक थे, साथ ही प्रोसोशल व्यवहार उप-स्केल पर कम औसत अंक थे। शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि भारतीय किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं व्यापक थीं।

कुलदीप सिंह कटोच और मीरा ठाकुर (2014) ने भारत के कुल्लू जिले के हाई स्कूल के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करने का प्रयास किया। इस उद्देश्य के लिए, कुल्लू जिले के सरकारी स्कूलों के हाई स्कूल के 160 छात्रों का नमूना सरल यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक के माध्यम से लिया गया था। डेटा एकत्र करने के लिए, जांचकर्ताओं ने छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को जानने के लिए आनंद (1990) द्वारा विकसित और मानकीकृत मानसिक स्वास्थ्य पैमाने का इस्तेमाल किया। विभिन्न समूहों के बीच अंतर के महत्व का पता लगाने के लिए, 'टी' परीक्षण लागू किया गया था। परिणामों ने संकेत दिया कि लिंग-वार और स्थानीयता-वार हाई स्कूल के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में महत्वपूर्ण रूप से अंतर नहीं था। लावण्या कुमारी पी (2012) ने भारत के चित्तूर जिले में स्थित सरकारी और निजी हाई स्कूलों में किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारकों पर एक सर्वेक्षण किया। पाँच



सरकारी स्कूल और पाँच निजी स्कूल यादृच्छिक रूप से चुने गए और प्रत्येक स्कूल से 30 छात्रों का चयन किया गया। मानसिक स्वास्थ्य विश्लेषण (एमएचए) जिसमें 200 “हां” या “नहीं” प्रकार के प्रश्न शामिल हैं, जिसे क्लार्क, डब्ल्यूडब्ल्यू, टाईगस, ईडब्ल्यू और थोप, एल.पी. मैनुअल (1959) द्वारा विकसित किया गया था। एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों जैसे कि आवृत्तियों, प्रतिशत, क्रॉस टेबुलेशन, ची-स्क्वायर टेस्ट, स्वतंत्र नमूना टी-टेस्ट, सरल और एकाधिक रैखिक प्रतिगमन का उपयोग करके एसपीएसएस 20 की मदद से किया गया था। परिणामों से पता चला कि लड़कियां लड़कों की तुलना में अपने मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में माता-पिता के साथ संबंध, दोस्तों के साथ संबंध और साथ ही अच्छे स्कूल के माहौल से अत्यधिक और सकारात्मक रूप से प्रभावित होती हैं।

4. अनुसंधान क्रियाविधि

किसी भी विषय में चाहे वह विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, वाणिज्य या मानविकी आदि हो, पद्धति अधिक वैज्ञानिक प्रकृति का होने के लिए व्यवस्थित और निष्पक्ष रूप से अध्ययन करने में अग्रणी भूमिका निभाती है। अनुसंधान समस्या का समाधान खोजने का एक व्यवस्थित प्रयास है। इन प्रयासों के लिए कुछ तकनीकों का ठीक से पालन करने की आवश्यकता होती है। किसी भी समस्या और व्यवहारिक परिणामों के लिए वास्तविक गतिशीलता का पता लगाने के लिए एक शोधकर्ता द्वारा की जा रही इन तकनीकों / कदमों का कुल योग है। दूसरे शब्दों में कार्यप्रणाली को “घटना की जांच के लिए वैज्ञानिक तरीकों के अनुप्रयोगों के तर्क” के रूप में परिभाषित किया गया है। यह एक प्रकार की निर्णय लेने की प्रक्रिया है जिसमें शोधकर्ता को चयनित समस्या के लिए उपयुक्त मॉडल, नमूनाकरण तकनीक, मापने के उपकरण और डेटा विश्लेषण विधियों का चयन करना होता है। हालाँकि, वैज्ञानिक जाँच की वस्तुनिष्ठता शोधकर्ता द्वारा अपनाई गई शोध पद्धति की सटीकता पर निर्भर करती है। वर्तमान अध्ययन के ब्रह्मांड में 16 से 18 वर्ष आयु वर्ग के विज्ञान और कला वर्ग के पुरुष और महिला उत्तरदाता शामिल थे, जो इटावा और अलीगढ़ शहर के इंटरमीडिएट कॉलेजों की बारहवीं कक्षा में पढ़ रहे थे, जो यूपी से संबद्ध थे। शिक्षा बोर्ड, इलाहाबाद। जनसंख्या में सभी तत्वों को उनकी जाति, पंथ, धर्म और विद्यालय व्यवसाय के बावजूद शामिल किया गया था।

जिन संस्थानों से लक्ष्य नमूना लिया गया है, उनका चयन करने के लिए सर्वप्रथम अन्वेषक ने जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय से इटावा एवं अलीगढ़ के इंटरमीडिएट महाविद्यालयों की सूची लायी। इटावा और अलीगढ़ शहर से केवल 19 स्कूल लिए गए। इन स्कूलों का चयन लॉटरी पद्धति के माध्यम से किया गया था, और विज्ञान और कला वर्ग दोनों से पुरुष और महिला उत्तरदाताओं का चयन प्रतिस्थापन तकनीक के बिना सरल यादृच्छिक नमूने का उपयोग करके किया गया था।

प्रतिदर्श का चयन- 16 से 18 वर्ष की आयु के प्रत्येक संस्थान के विज्ञान एवं कला वर्ग की बारहवीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कुल समूह में से विज्ञान एवं कला वर्ग के छात्र-छात्राओं का अन्तिम प्रतिदर्श चयन किया गया। नमूना संग्रह की आकस्मिक तकनीक।

नमूने के प्रतिनिधित्व का परीक्षण -

अनुभवजन्य शोधों में, जहां पैरामीट्रिक आंकड़ों का उपयोग किया जाना है, यह जानना आवश्यक है कि क्या चयनित नमूना आकार पैरामीट्रिक आंकड़ों की धारणाओं को पूरा करने के उद्देश्य से पर्याप्त है और क्या नमूना लक्ष्य आबादी का प्रतिनिधि है, ताकि सामान्यीकरण किया जा सके परिणाम प्रामाणिक रूप से बनाए जा सकते हैं। इस प्रकार निम्नलिखित प्रक्रिया का उपयोग करके नमूना आकार की प्रतिनिधित्व क्षमता निर्धारित की गई थी।

नमूने की प्रतिनिधित्व क्षमता निर्धारित करने में प्राथमिक विचार एक अच्छी तरह से परिभाषित चर और माप की मानक त्रुटि पर प्राप्त अंकों का वितरण है।



अमृत काल

अंतर्राष्ट्रीय विशिषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका

ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

वर्तमान जांच के संबंध में, चयनित नमूने की प्रतिनिधित्व क्षमता के परीक्षण के लिए शैक्षणिक उपलब्धि को प्रासंगिक चर माना गया था। इसके पीछे का कारण ब्रह्मांड में उपलब्धि अंकों का सामान्य वितरण है।

वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों के पुरुष और महिला, विज्ञान और कला वर्ग के छात्रों की चयनित आबादी में अकादमिक उपलब्धि के अंकों की प्रकृति की जांच करने के लिए, शैक्षणिक उपलब्धि के रूप में प्राप्त अंकों को सारणीबद्ध रूप में वर्गीकृत किया गया था। प्राप्तियों का बारंबारता बंटन तैयार किया गया, जो नीचे दी गई तालिका में दिया गया है।

5. विश्लेषण और व्याख्या

तालिका 5.1. कला वर्ग के लड़कों और लड़कियों के विद्यालय वातावरण स्कोर और कला छात्रों के कुल नमूने का आवृत्ति वितरण।

S.No	कक्षा अंतराल	लड़के (कला)			लड़कियाँ (कला)			कुल कला छात्र		
		F	c.f	%c.f	F	c.f	%c.f	f	c.f	%c.f
1	181 – 191	0	0	0	2	2	1.2	2	2	0.58
2	192 – 202	6	6	3.3	3	5	3.0	9	11	3.19
3	203 – 213	4	10	5.6	1	6	3.6	5	16	4.64
4	214 – 224	17	27	15.0	11	17	10.3	28	44	12.75
5	225 – 235	24	51	28.3	28	45	27.3	52	96	27.83
6	236 – 246	32	83	46.1	34	79	47.9	66	162	46.96
7	247 – 257	37	120	66.7	37	116	70.3	74	236	68.41
8	258 – 268	31	151	83.9	23	139	84.2	54	290	84.06
9	269 – 279	20	171	95.0	10	149	90.3	30	320	92.75
10	280 – 290	6	177	98.3	10	159	96.4	16	336	97.39
11	291 – 301	3	180	100.0	6	165	100.0	9	345	100.0
N		180			165			345		



उपरोक्त तालिका का अवलोकन इंगित करता है कि अधिकांश आवृत्तियों 214 से 279 की सीमा के भीतर हैं। इससे पता चलता है कि अधिकांश विषय वितरण के बीच में केंद्रित हैं यानी विद्यालय वातावरण के स्कोर में सामान्य प्रवृत्ति है।

कुल कला छात्रों (लड़कों \$ लड़कियों) के विद्यालय वातावरण स्कोर दिखाने वाले आवृत्ति बहुभुज (एन = 345)

दो समूहों के बीच मौजूद भिन्नता और लड़कों, लड़कियों के कला समूह के भीतर फैलाव और कुल कला नमूने को समझने के लिए मीन, मेडियन, एसडी, क्यूडी स्क्यूनेस और कर्टोसिस की भी गणना की गई और नीचे दी गई तालिका में दिए गए हैं।

तालिका 5.2 लड़कों, लड़कियों के विद्यालय वातावरण स्कोर और कला वर्ग के कुल नमूने के सांख्यिकीय उपाय।

समूहों	औसत	माधिका	एस.डी.	Q.D.	कू	Sk
लड़के (180)	247.58	249.00	21.43	25	-.162	-.188
लड़कियाँ (165)	248.26	247.00	21.84	25	.424	.016
कुल (345)	247.90	248.08	21.60	25	.117	-.086

सारणी 4.2 की सावधानीपूर्वक दृष्टि डालने से तिरछापन और कुर्टोसिस मूल्यों का पता चलता है। तिरछापन (-.086) का नकारात्मक मान बताता है कि डेटा बाई ओर तिरछा है, और लगभग सममित है। अतिरिक्त कुर्टोसिस (.117) शून्य से थोड़ा अधिक है जिसका अर्थ है कि वितरण थोड़ा लेप्टोकुरटिक है।

अवलोकन इस निष्कर्ष की ओर ले जाते हैं कि कला के छात्रों के विद्यालय वातावरण स्कोर सामान्य रूप से वितरित किए जाते हैं।

विज्ञान के छात्रों का नमूना

विज्ञान वर्ग के लड़कों और लड़कियों छात्रों और कुल विज्ञान छात्रों की चयनित आबादी में विद्यालय वातावरण स्कोर की प्रकृति की जांच करने के लिए, विद्यालय पर्यावरण पैमाने पर प्राप्त स्कोर को सारणीबद्ध रूप में वर्गीकरण किया गया था। स्कोर का एक आवृत्ति वितरण तैयार किया गया था, जो तालिका 4.3 में दिया गया है।



तालिका- 5.3 विज्ञान वर्ग के लड़कों और लड़कियों के विद्यालय वातावरण स्कोर और विज्ञान के छात्रों के कुल नमूने का आवृत्ति वितरण।

S.No	कक्षा अंतराल	लड़के (विज्ञान)			लड़कियाँ (विज्ञान)			कुल विज्ञान छात्र		
		F	c.f	%c.f	F	c.f	%c.f	f	c.f	%c.f
1	131 – 150	1	1	0.4	0	0	0	1	1	0.19
2	151 – 170	0	1	0	1	1	0.4	1	2	0.38
3	171 – 190	3	4	1.4	0	1	0	3	5	0.96
4	191 – 210	4	8	2.9	5	6	2.5	9	14	2.69
5	211 – 230	37	45	16.3	15	21	8.6	52	66	12.69
6	231 – 250	71	116	42.0	42	63	25.8	113	179	34.42
7	251 – 270	89	205	74.3	81	144	59.0	170	349	67.12
8	271 – 290	59	264	95.7	70	214	87.7	129	478	91.92
9	291 – 310	11	275	99.6	29	243	99.6	40	518	99.62
10	311 – 330	1	276	100	1	244	100	2	520	100
N		276			244			520		

तालिका 5.3 से यह स्पष्ट हो सकता है कि विज्ञान के छात्रों के विद्यालय वातावरणस्कोर वितरण के बीच में केंद्रित हैं और लड़कों, लड़कियों के साथ-साथ कुल छात्रों के स्कोर के बीच धीरे-धीरे कमी दिखाते हैं, जिससे जनसंख्या में विद्यालय वातावरणस्कोर के सामान्य वितरण का संकेत मिलता है। इससे यह भी पता चलता है कि अध्ययन के तहत आबादी की विद्यालय वातावरणकी प्रवृत्ति मध्यम विद्यालय वातावरण की ओर है। वर्ग

निष्कर्ष

अध्ययन की आदतों के निहितार्थों पर आते हुए, हम कुछ व्यक्तिगत और समूह मार्गदर्शन प्रक्रियाओं का सुझाव दे सकते हैं, जिनका उपयोग अध्ययन की आदतों में सुधार करने और कम उपलब्धि हासिल करने वालों और असफल लोगों के कौशल का अध्ययन करने के लिए किया जा सकता है। व्यक्तिगत परामर्श उनकी उपलब्धि में सुधार और उनकी अध्ययन की आदतों और अध्ययन कौशल में सुधार के लिए एक प्रभावी हस्तक्षेप के रूप में काम कर सकता है। इस तरह से कम उपलब्धि हासिल करने वालों की मदद करना निश्चित रूप से व्यक्ति की क्षमताओं का उचित उपयोग करके बेहतर परिणाम लाएगा और इस प्रकार शिक्षा के उद्देश्य को साकार करेगा। इस तरह के मार्गदर्शन प्रदान करने का कारण यह है कि हम पाते हैं कि स्कूलों में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया केवल औसत छात्रों की जरूरतों को



पूरा कर रही है, जहां रचनात्मक, धीमी गति से सीखने वालों, पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों और कम उपलब्धि वाले विशेष समूहों की उपेक्षा की जाती है। इन विशेष समूहों की जरूरतों पर गौर करने के लिए कम उपलब्धि हासिल करने वालों के लिए परामर्शदाताओं की तत्काल आवश्यकता है।

आत्मविश्वास बढ़ाने के संबंध में शिक्षक माता-पिता को अपने बच्चों को प्यार और गर्मजोशी का माहौल प्रदान करने के लिए मार्गदर्शन कर सकते हैं। वे शिक्षकों को ऐसी गतिविधियाँ शुरू करने और विकसित करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं जो छात्रों की विविधता के प्रति संवेदनशील हों। यह एक सहायक विद्यालय वातावरण प्रदान करेगा जो स्वस्थ गुणों को बढ़ावा देता है। इसके अलावा वे प्रोत्साहन की भूमिका निभाकर बच्चों को लचीलापन विकसित करने में भी मदद कर सकते हैं, कोई ऐसा व्यक्ति जो हार के महत्व को स्वीकार करता है लेकिन इसे व्यक्तिगत विफलता की भावना में परिणाम नहीं होने देता। कुंजी यह है कि बच्चे को बड़ी तस्वीर देखने में मदद करें और फिर से प्रयास करने की क्षमता पर ध्यान केंद्रित करें या यदि आवश्यक हो, तो लक्ष्य को पूरा करने के लिए वैकल्पिक साधन खोजें। यह प्रक्रिया बच्चे को प्रयास के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करने की अनुमति देती है, लेकिन उसे अपने स्वयं के मूल्य के बारे में भी आश्वस्त किया जाता है। बच्चों को यह भी विश्वास होना चाहिए कि सिद्धि उनके अपने कार्यों से आती है। इसे अक्सर आत्म-प्रभावकारिता या आत्मनिर्णय के रूप में जाना जाता है। जिन बच्चों में इस क्षमता की कमी होती है, वे कम लचीले, अत्यधिक निर्भर हो सकते हैं, या अपने कार्यों के लिए जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं होता कि वे नियंत्रण में हैं।

सारांशित करने के लिए, वर्तमान शोध अकादमिक उपलब्धि का एक अनुमानित उपकरण प्रस्तुत करता है जिसका उपयोग माता-पिता, शिक्षकों, प्रशासकों और मार्गदर्शन कर्मियों द्वारा विशेष रूप से वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [1]. अग्रवाल, के.एल. (1986)। छात्रों के शैक्षिक विकास पर माता-पिता के प्रोत्साहन के प्रभाव का अध्ययन। पीएच.डी. एडू।, गढ़वाल यूनिवर्सिटी।
- [2]. अग्निहोत्री, आर. (1993). अग्निहोत्री की आत्म-विश्वास सूची (हिंदी संस्करण)। आगरा: राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक निगम।
- [3]. आहूजा, एम. और गोयल, एस. (2006)। माता-पिता की भागीदारी और माता-पिता की आकांक्षाओं के संबंध में किशोरों की विषय-वार उपलब्धि। कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च जर्नल, खंड 23 (1), 30-57।
- [4]. अल्बुकर्क, जेड.एम. और अन्य। (1990)। कॉलेज के छात्रों के बीच जीवन की घटनाएं और तनाव। जर्नल ऑफ पर्सनेलिटी एंड क्लिनिकल स्टडीज, खंड 6, 177-184।
- [5]. अलियास, एम. और हाफिर, एन.ए.एच.एम. (2009)। इंजीनियरिंग छात्रों के बीच अकादमिक आत्मविश्वास और संज्ञानात्मक प्रदर्शन के बीच संबंध। इंजीनियरिंग शिक्षा संगोष्ठी, पाम कोव, क्यूएलडी में अनुसंधान की कार्यवाही।
- [6]. एलेन्सवर्थ, डी., लॉसन, ई., निकोलसन, एल., और विच, जे. (1997)। स्कूल और स्वास्थ्य: हमारे देश का निवेश। वाशिंगटन, डीसी, नेशनल एकेडमी ऑफ प्रेस।
- [7]. आनंद, एस.पी. (1989)। हाई स्कूल के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य। भारतीय शैक्षिक समीक्षा (प्मत्), टवस.24 (2), 14-24।
- [8]. अन्नंजियाता, डी., हॉग, ए., फॉ, एल., और लिडेल, एच.ए. (2006)। पारिवारिक कामकाज और स्कूल की सफलता खतरे में भीतरी शहर के किशोरों में। जर्नल ऑफ यूथ एंड एडोलेसेंस, वॉल्यूम। 35(1), 105-113।
- [9]. एंटोन, एएफ और एंजल, बी (2004)। सामाजिक व्यक्तित्व, शैक्षिक अभिरुचि, अध्ययन की आदतें और शैक्षणिक उपलब्धि। मनोवैज्ञानिक के यूरोपीय जर्नल



अमृत काल

अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका

ISSN: 3048-5118, खंड 3, अंक 2, अप्रैल - जून 2025

- [10]. आरती, सी., और प्रभा, आर. (2005)। किशोरों के पारिवारिक वातावरण पर चयनित पारिवारिक चर का प्रभाव। कम्प्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च जर्नल, खंड 22 (2), 176-184।
- [11]. आशा, सी.बी. (2003). रचनात्मकता - बुद्धि, शैक्षणिक तनाव और मानसिक स्वास्थ्य। जर्नल ऑफ कम्प्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च, खंड 20 (1), 41-47।
- [12]. अयोध्या, पी. (2007). माध्यमिक विद्यालय के बच्चों में भावनात्मक समस्याएं और जीवन की घटनाओं और शैक्षिक उपलब्धि से इसका संबंध। कम्प्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च जर्नल, खंड 24 (3), 347-355।
- [13]. बंडुरा, ए। (1977)। आत्म-प्रभावकारिता: व्यवहार परिवर्तन के एक एकीकृत सिद्धांत की ओर। मनोवैज्ञानिक समीक्षा, वॉल्यूम। 84, 191-215।
- [14]. बंडुरा, ए। (1982)। मानव एजेंसी में आत्म-प्रभावकारिता। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक, टवस.37, 122-147।
- [15]. बंडुरा, ए। (1986)। विचार और कार्यों की सामाजिक नींव। शागिर्द कक्ष।
- [16]. बंडुरा, ए। (1997)। आत्म-प्रभावकारिता: नियंत्रण का अभ्यास। न्यूयॉर्क: डब्ल्यू.एच. फ्रीमैन।
- [17]. बंडुरा, ए। (1999)। आत्म-प्रभावकारिता: व्यवहार परिवर्तन के एक एकीकृत सिद्धांत की ओर। आर.एफ. बॉमिस्टर (एड.), द सेल्फ इन सोशल साइकोलॉजी (पीपी. 285-298)। फिलाडेल्फिया, पीए: टेलर और फ्रांसिस समूह।
- [18]. बंडुरा, ए। एट अल। (2001)। आत्म-प्रभावकारिता विश्वास बच्चों की आकांक्षाओं और कैरियर प्रक्षेपवक्र के आकार के रूप में। बाल विकास, वॉल्यूम। 72, 187-206।
- [19]. बेंटले, डी.ए. और अन्य। (1980)। तनाव सहसंबंध और अकादमिक उपलब्धि।